पंचम् अध्याय

पंचम् अध्याय

" विवेच्य उपन्यासों में चित्रित युवा-मानसिकता "

5.1 *मानसिकता : अर्थ एवं परिभाषा :-*

' मानसिकता ' का अर्थ है मन का भाव या स्थिति । मन की वह विशेष स्थिति या वृत्ति, जिसके वशवृत्ति होकर मनुष्य बर्ताव या व्यवहार करता है । " ' मानसिकता ' शब्द की उत्पत्ति इस प्रकार मानी जाती है - मनमानस (मन संबंधी, मन से उत्पन्न) मानसिकता (मन से संबंधित) मानसिकता "[1]

मन: मनस, चित्, अन्तकरण, मैंड़ आदि मन के पर्यायवाची शब्द हैं । मनुष्य के बर्ताव या व्यवहार से मन का संबंध निरूपित हो चुका है । मानवी बर्ताव से ही मानसिकता बोधगम्य बनती है । बर्ताव का प्रकारांतर से मानसिकता का अध्ययन करनेवाला शास्त्र है - मनोविज्ञान मन + विज्ञान = मन या मनस का विशेष ज्ञान मनोविज्ञान है । अँग्रेजी में इसे सैकॉलॉजी (Psychology) कहते हैं । यह शब्द दो ग्रीक शब्दों से बना है । सैके का अर्थ है आत्मा और लॉगोस का अर्थ है शास्त्रीय विचार । मनोविज्ञान, मनोव्यापारों का अध्यन करनेवाला शास्त्र है । मनोविज्ञान मन का शास्त्र है । फिर प्रश्न उठता है कि मन क्या है ? मानवी मन हजारों वर्षों से विद्वानों की जिज्ञासा का, चिंतन का तथा अध्ययन का विषय रहा है । अनेक विद्वानों ने मन की परिभाषाएँ अनेक प्रकारों से दे दी हैं । उसमें से प्रमुख परिभाषाएँ इसप्रकार हैं - ' हिंदी साहित्य कोश ' में लिखा है - " जिसे मन कहा जाता है, उसी का साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से परिष्कृत रूप ही मानस है । इस शब्द से विचारों, संवेदनाओं तथा अनुभूतियों के संघटन और आधारस्वरूप एक सत्ता का बोध होता है "[2] ' दी रण्ड़म हाऊस डिक्सनरी ऑट दी इंग्लिश लैंगवेज ' के अनुसार - " Mind is that Part of man which thinks, fells

---

1. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता, पृष्ठ - 10
2. हिंदी साहित्य कोश, भाग - 1, पृष्ठ - 640

wills, Perceixes and Judges. "[1] महर्षि यास्क के अनुसार - " महर्षि यास्क ने अपने ग्रंथ ' निरुक्कम् ' में मन शब्द की उत्पत्ति मनु से की है । जिसका तात्पर्य अवबोधन, चिंतन, मनन आदि माना है । "[2] काँट के अनुसार - " जहाँ अनुभवों का एकत्रीकरण होता है, संकलन होता है, पुर्नस्थापना होती है, वही पृष्ठभूमि मन है । "[3] अरस्तू के अनुसार - " चिंतन या मनन करने की शक्ति ही मन है । यह आत्मा से परे है । "[4] फ्रायड़ के अनुसार - " मन का अधिकांश भाग अबोध होता है । उसमें विविध विचार, अनुभव, इच्छाएँ समाविष्ट होती है । दमित इच्छाओं का भांड़ार भी मन है । "[5] मन के बारे में डॉ. सुजाता लिखती है- " मानव व्यवहार की बुद्धि अहंकारादि अन्य तत्त्व भी प्रभावित करते हैं । पर सर्वाधिक प्रभावित करता है मन, वही जो सांख्यादि ग्रंथों में बुद्धि का वजीर मात्र था । अर्थात बुद्धि के निर्णयों के कार्य रूप में परिणित का कार्य करता था । अब वही मन मानव व्यवहार का प्रेरक बन बैठा है । "[6]

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश विचारकों ने मन की संकल्पना को माना है । उनके विचारों के अनुसार विचार, अनुभव, इच्छा आदि का पंजीकृत रूप ही मन है, कुछ विचारक मन के अस्तित्व के बारे में साशंक हैं । क्योंकि मन क्या है ? कहाँ है ? आदि निश्चित रूप से कहा नहीं जाता । मन एक अमूर्त कल्पना है । परंतु मन के स्वतंत्र अस्तित्व को अनुमान द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है । अवधान, संवेदन, स्मृति, विचार, कल्पना, स्वप्न आदि मनोव्यापारों से मन के अस्तित्व का अनुमान होता है ।

---

1. दी रण्ड़म हाऊस ड़िक्सनरी ऑट दी इंग्लिश लैंगवेज, पृष्ठ - 911
2. महर्षि यास्क - निरुभाम्, नैगमकांड़ 4/115, पृष्ठ - 165
3. सं. डॉ. स्वर्णलता भिशीकर - मनाचा शोध, पृष्ठ - 6
4. हिस्टरी ऑफ वेस्टर्न फिलॉसाफी, पृष्ठ - 192-193
5. A General Introduction to Psycho-analysi, पृष्ठ - 78
6. डॉ. सुजाता - हिंदी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृष्ठ - 27

5.2 *मन और शरीर का परस्पर संबंध :-*

मन और शरीर का घनिष्ठ संबंध है । शारीरिक व्यापार का मन पर और मन का शरीर पर हुए परिणामों की अनुभूति व्यवहार में सर्वत्र होती है । डॉ. लाज के अनुसार - " मानसिक अवस्था का शरीर पर और शारीरिक परिवर्तन का मन पर प्रभाव पड़ता है । "[1] जब ज्ञानेन्द्रियों का बाह्य वस्तुओं से संयोग हो जाता है, तो मन को उसका ज्ञान या बोध होता है । उसी को ' अनुभव ' कहा जाता है । मन की ग्रहण शक्ति के माध्यम से जो अनुभव होता है, उसकी पहली अवस्था है ' बोधन ' (Knowing) वस्तु बोधन के बाद मन में सुख, दु:खात्मक भावना उत्पन्न हो जाती है । उसी को ' भावन '(Feeling) कहा जाता है । भावन से व्यक्ति कार्यप्रवृत्त हो जाता है । यह अनुभव की तीसरी अवस्था है । इसी को प्रेरणा या प्रवर्तन कहा जाता है । इस संदर्भ में डॉ. गणेशदत्त गौड़ कहते हैं - " शारीरिक क्रियाओं का संचालक मनोभाव के बिना असंभव है । "[2] क्रोध, भय, चिन्ता आदि से शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है । आनंद मनस्वास्थ्य से शरीर उल्लासित, उत्साहित होता है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि मन और शरीर का घनिष्ठ संबंध है । मन का शरीर पर और शरीर का मन पर प्रभाव पड़ता है । मनुष्य की मानसिक स्थिति खराब हो तो उसका असर शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है और शारीरिक स्वास्थ्य खराब हो तो उसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है । इन दोनों का स्वास्थ्य एक दूसरे पर निर्भर है । यदि इन दोनों में से एक का भी स्वास्थ्य बिगड़ जाये तो उसका बुरा असर मनुष्य पर होता है । मन शारीरिक क्रियाओं का संचालक है । पूरे शरीर की बागड़ौर उसके हाथ में है । इससे स्पष्ट होता है कि मन और शरीर का घनिष्ठ संबंध है ।

5.3 *मन और बर्ताव का परस्पर संबंध :-*

देखना, सुनना, बोलना, सोचना, स्मरण करना, कार्य करना आदि का बर्ताव में समावेश होता है । चाहे वह जागृति में हो, चाहे नींद में, चाहे सपने में हो । मनोविज्ञान में बर्ताव या व्यवहार शब्द का

---

1. प्रोफेंबरजर - प्रिंसिपल ऑफ सायकॉलॉजी, पृष्ठ - 558
2. डॉ. गणेशदत्त गौंड़ - आधुनिक हिंदी नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ - 6

अर्थ व्यापक है । आचार-विचार तथा उच्चार बर्ताव की परिधि में आते हैं । इस संदर्भ में डॉ. स्वर्णलता भिशीकर कहती है - " मन और बर्ताव का कार्य कारण संबंध है । मन के कारण ही बर्ताव होता है । "[1] मानव व्यवहार का नियामक मन है । इस संदर्भ में डॉ. सुजाता लिखती है - " जो समस्त इन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों सहित शरीर व्यवहार को क्रिया रूप देने वाला है । "[2] परंतु मन और बर्ताव के संबंध में मनोवैज्ञानिकों में मतभेद हैं । जड़वादी तथा प्रत्यक्ष प्रमाणवादी वॉटसन आदि के अनुसार मानवी बर्ताव उद्दीपक प्रतिक्रिया है अर्थात प्रतिक्षिप्त है । मैकडूगल के अनुसार बर्ताव के मूल में कोई न कोई सहज प्रवृत्ति होती है । फ्रायड़ के अनुसार प्रत्येक बर्ताव के मूल में कोई न कोई प्रेरणा या हेतु होता है ।

मन और बर्ताव के परस्पर संबंध पर दृष्टिपात करने पर मेरा यह विनम्र निष्कर्ष है कि मनुष्य के बर्ताव के मूल में मन है । मनुष्य की मानसिकता पर ही बर्ताव निर्भर होता है । किसी भी देश के समाज का स्वास्थ्य उस समाज में स्थित व्यक्ति की मानसिकता पर निर्भर होता है । क्योंकि यह मानसिकता ही व्यक्ति को बर्ताव करने के लिए प्रेरित करती है । अत: मन और बर्ताव का घनिष्ठ संबंध है । मनुष्य को बर्ताव या व्यवहार करने के लिए मन प्रेरित या उद्दिप्त करता है ।

5.2 *भारतीय युवा मानसिकता का इतिहास :-*

भारतीय युवा का अपना इतिहास है । उसकी मानसिकता को जानने के लिए एक बहुत बड़ा माध्यम है - साहित्य । प्राचीन काल से लेकर अँग्रेजों के आने तक इतिहास से स्पष्ट है कि भारतीय युवा अपनी अस्मिता और व्यक्तित्व के प्रति बहुत सजग नहीं था । परिवार में बड़ों की आज्ञा पालन में अपने जीवन की कृतार्थता मानना ही उसके जीवन का लक्ष्य रहा । यही स्थिति समाज, धर्म और राजनीति के क्षेत्र में थी । प्रस्थापित व्यवस्था को चुनौती देना उसके स्वभाव में नहीं था । खासकर धर्म और संप्रदायों द्वारा इसी प्रकार के संस्कार उस पर डाले गये थे । दूसरे शब्दों में वह लकीर का फकीर था । संभवता भक्त प्रल्हाद यह पहला विद्रोही भारतीय युवक है, जिसने अपने पिता की मान्यताओं को

---

1. सं. डॉ. स्वर्णलता भिशीकर - मनाचा शोध, पृष्ठ - 9
2. डॉ. सुजाता - हिंदी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृष्ठ - 17

चुनौती दी थी । रामायण में बिभीषण तथा महाभारत में द्रोपदी और कर्ण जैसे अपवादात्मक पात्र मिलते हैं । जो प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाते हैं । उनकी आवाज ही इतनी बुलंद रही कि इनका उदात्तीकरण किया गया । मराठा इतिहास से स्पष्ट होता है कि शिवाजी ने विद्रोह करके हिंदवी स्वराज्य का संस्थापक बनने का सम्मान प्राप्त किया । इन अपवादों को छोड़ दे तो अधिकांश भारतीय घरों में बचपन से ही नई पीढ़ी पर ऐसे संस्कार डाल दिये जाते हैं कि अपने मन को मारकर बड़ों के आदर्श तथा बने बनाये मार्ग पर ही चलना चाहिए । यहाँ के लेखकों ने भी उसके मन के भीतरी द्वंद्व को उभारने का प्रयत्न नहीं किया । परिणामत: प्राचीन भारतीय युवा मानसिकता की विभिन्न स्थितियों, अन्तर्द्वंद्वों तथा मूल्यात्मक संघर्षों का पता नहीं चल पाता ।

वास्तव में सन् 1857 के बाद जब देश अँग्रेजी शिक्षा के संपर्क में आया, तभी से धीरे-धीरे क्यों न हो भारतीय युवकों को अपने अस्तित्व, अस्मिता और प्रस्थापित व्यवस्था की सीमाओं का एहसास होने लगा । कुछ ही वर्षों में भारतीय प्रमुख नगरों में विश्वविद्यालय और महाविद्यालय खुलें और यहाँ के युवा पहली बार यूरोपीय विचारों के संपर्क में आये । सन् 1857 के बाद सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में विविध आंदोलन शुरु हो गये । जैसे - ब्राह्मो समाज (सन् 1858), आर्य समाज (सन् 1875), थियोसोफिकल सोसायटी (सन् 1879), काशी नागरी प्रचारिणी सभा (सन् 1893) भारत सेवक समाज आदि । इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन युवक जीवन की स्थितिशीलता को तोड़कर कुछ नया करना चाह रहे थे । परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन अधिक गतिशील हुआ । इस काल के युवकों के सम्मुख राजनीतिक स्वतंत्रता यही एकमात्र लक्ष्य था । जिसको प्राप्त करने के लिए वे बड़ी सी बड़ी कीमत चुकाने को तैयार थे । भौतिक सुख और आकर्षण के परे ये युवक चले गये थे । इस काल के युवक अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और कुंठाओं के परे जाकर कार्यरत रहे ।

स्वतंत्रता के बाद आरंभिक वर्षों में भी युवक इसी स्तर पर जीते रहें । उनके सम्मुख स्वतंत्र देश की समस्याएँ थीं । विकास की चुनौतियाँ थीं । शिक्षा समाप्त करने के बाद विकास की किसी यंत्रणा से जुड़कर पूरी ईमानदारी से विकास कार्यों को गति देना ही उनका लक्ष्य रहा । सन् 1947 से लेकर सन्

1967 तक युवकों को व्यवस्था में कहीं न कहीं जगह मिल ही जाती थी । परंतु 1967 के बाद धीरे-धीरे यह स्थिति बदलती गई । प्रशासन का इतना विस्तार हुआ कि आने वालों को उसमें समा लेना संभव नहीं था । राजनीति में भ्रष्टाचार ने अपना विकृत रूप दिखाना शुरु कर दिया था । भ्रष्ट राजनीति का प्रभाव अर्थनीति, समाजनीति तथा शिक्षानीति पर भी हुआ । परिणामस्वरूप भारतीय युवा इस परिवेश में दिगमूढ़ हो गया ।

मूल्यहीन राजनीति, भ्रष्ट प्रशासन अर्थकेंद्रित समाज व्यवस्था और दिशाहीन शिक्षा-नीति की चंगुल में आज का युवा फँसा हुआ है । इससे उत्पन्न समस्याओं को दो स्तरों पर रखकर सोचा जा सकता है । समस्याओं का एक स्तर परिवेश और व्यवस्था के साथ जुड़ा है । दूसरा स्तर उसके व्यक्तित्व से संबंधित है । इन स्थितियों में उसका मन किस प्रकार प्रतिक्रियारत होता है, यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न है । समाजशास्त्रज्ञ तथा मनोवैज्ञानिक उसकी इस मानसिकता के गहराई में जाकर अध्ययन कर रहे हैं ।

5.5 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित युवा-मानसिकता :-

विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में युवा मानसिकता के विविध रूप हैं । उनका युवा, मानसिकता के हर कोने में झाँकता हुआ नजर आता है । इन युवाओं की मानसिकता उनके बर्ताव और व्यवहार में दिखाई देती है । इस युवा वर्ग की मानसिकता निम्नप्रकार की है -

5.5.1 कुंठाग्रस्त मानसिकता और युवा वर्ग :-

कुंठा व्यक्ति परिवर्तन को प्रभावित करती है । व्यक्ति के जीवन में अनेक अभिप्रेरणाएँ होती हैं और प्रत्येक का कोई न कोई लक्ष्य होता है । लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार प्रयत्न करता है । यदि उन प्रयत्नों में विफल होता है तो अन्य कोई मार्ग ढूँढ़ लेता है । लक्ष्य प्राप्ति के बाद अभिप्रेरणा तृप्त हो जाती है और अभिप्रेरणात्मक वर्तन समाप्त हो जाता है । परंतु यह देखा गया है कि व्यक्ति की सभी प्रेरणाओं की तृप्ति नहीं होती । तब भग्नाशा में उसमें कुंठा उत्पन्न होती है और वह कुंठाग्रस्त होता है ।

' मानक हिंदी कोश ' के अनुसार - " कुंठा मनुष्य की अतृप्त तथा तृप्त भावना जो उसको आगे बढ़ाने में बाधक होती है । " [1] कुंठित वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि मन्द हो, गति अवरुद्ध हो,गतिहीन हो । गरीबी, पारिवारिक झगड़े, वैवाहिक जीवन में असंतोष, अशांति, अर्थ का अभाव, वैयक्तिक अक्षमता, पारिवारिक-सामाजिक स्थितियाँ आदि के कारण व्यक्ति के जीवन में विफलता निर्माण होती है । परिणामत: चिन्ता-तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है । नि:सहाय, विवश, निराश स्थिति में व्यक्ति कुंठाग्रस्त हो जाता है और उसके बर्ताव में पर्याप्त अंतर आ जाता है । इस संदर्भ में डॉ. रामकुमार रॉय लिखते हैं - " इसमें आलोचना के प्रति अत्याधिक संवेदनक्षमता, संदेही, स्वभाव, द्वेष, प्रतिस्पर्धा के प्रति भय, असफलता के प्रति संकीर्ण प्रतिक्रियाएँ, दूसरों की निंदा करना, तीव्र आत्मचेतना,चिंताशीलता, अत्याधिक आत्मविश्लेषण आदि परिलक्षित होती है । " [2] विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता कुंठाग्रस्त है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में खजुआ मोची की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । वह चमार है । उसका धंधा ठीक से चल नहीं रहा है । इसलिए उसे आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ता है । उसमें अर्थ की कुंठा उत्पन्न हो गई है । इसलिए उसकी मानसिकता कुंठाग्रस्त बन गई है । उसकी बुद्धि मन्द हो गई है । उसके सामने से जो भी नंगे पैर जाता है, उसे वह गाली देते रहता है । उसके पास जो आदमी नहीं आता, उसे भी वह गाली देते रहता है । उसे लगता है कि इन लोगों के कारण ही मुझे आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ रहा है । उसके कुंठा के मूल में गरीबी और अर्थ का अभाव है । इस युवा पात्र की कुंठाग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए संतू बाबू कहते हैं - " खजुआ मोची हर उस आदमी को गाली देता था जो उसके सामने से नंगे पैर निकल जाते थे । वह उन आदमियों, बच्चों को भी गंदी गालियाँ दिया करता था जो चप्पल-जूते पहने होते और उसके पास से बिना रुके आगे बढ़ जाते । " [3] उसके इस बर्ताव के कारण वह पिटता भी है । इस कुंठा का गहरा परिणाम उसके मन और मस्तिष्क पर हुआ है । इसलिए उसके बर्ताव में बदलाव आया है और उसकी मेधा मन्द हो गई है ।

---

1. सं.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, खंड-8, पृष्ठ - 53
2. डॉ. रामकुमार रॉय - असामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ - 66
3. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 92

प्रस्तुत उपन्यास में युवा लड़के की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । उपन्यास में उसके नाम का उल्लेख नहीं है । उसके घर की स्थिति बहुत ही खराब है । इसलिए वह कुछ काम करके अपने घर की स्थिति को सुधारना चाहता है । वह रेड़ियो बनाना सीखना चाहता है । रेड़ियो का काम सीखना यह उसका लक्ष्य है । इसके माध्यम से वह अपने परिस्थिति को सुव्यवस्थित बनाना चाहता है । वह रेड़ियो का काम सीखने के लिए रेड़ियो स्कूल में भर्ती हो जाता है । लेकिन वहाँ का मास्टर उसके साथ बेईमानी करता है । उस मास्टर की बेईमानी के कारण वह अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाता । वह भग्नाश हो जाता है । इसमें से ही उसकी मानसिकता कुंठाग्रस्त बन जाती है । इसका गहरा परिणाम उसके बर्ताव पर पड़ता है । वह रेड़ियो स्कूल में भर्ती होनेवाले हर नये आदमी को ताकते रहता है और उनके सामने मास्टर की बेईमानी का विश्लेषण करते रहता है । ताकि कोई उसके रेड़ियो स्कूल में भर्ती न हो । वह संतू बाबू से कहता है - " मैं हर नए आदमी को ताकता रहता हूँ । स्कूलवालों ने मेरे साथ बेईमानी की है । तीन महीने में रेड़ियो बनाना सीख जाऊँगा, यह सोचकर मैं भर्ती हुआ था । आठ महीने हो गए, अभी तक मुझमें आत्मविश्वास नहीं आया कि किसी के बिगड़े रेड़ियो को सुधार दूँ । यहाँ से सीखकर कोई नहीं जाता, सब छोड़कर जाते हैं । " [1] इसमें से उसकी कुंठाग्रस्त मानसिकता परिलक्षित होती है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में गुरुजी की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । वे अपने परिवार समवेत पाठशाला में रहते हैं । एक दिन आँधी और बारिश के कारण पाठशाला का छत उजड़ जाता है । उनकी गृहस्थी बेघर हो जाती है । तब वे अपने परिवार समवेत गाँव के खुले थाने में आश्रय लेते हैं । थाने में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता, लेकिन कुछ पर्याय न होने के कारण उन्हें थाने में रहना पड़ता है । उनकी धारणा है कि थाने में केवल गुंड़ा-गर्दी करनेवाले, अन्याय-अत्याचार करनेवाले और खून-खराबा करनेवाले, चोरी करनेवाले लोग ही रहते हैं । कोई अपने को इस वर्ग का ना समझे, लोग अपनी ओर कैदी की नजर से ना देखें, ऐसा उन्हें हरसमय लगता है । उनको अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा कम होने का भी भय रहता है । इसलिए वे सदैव नये व्यक्ति को थाने में अपने रहने और आने के कारणों को बतलाते रहते हैं । वे लोगों को अपनी विवशता और मजबूरी से परिचित कराते हैं । इसमें से ही उनमें हीन कुंठा

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 120

का निर्माण होता है और उनकी मानसिकता कुंठाग्रस्त बन जाती है । वे शाला निरीक्षक से कहते हैं - " आप समझते हैं कि मैं कैदी हूँ । मैंने चोरी की होगी । या रुल से किसी बच्चे का सिर तोड़ दिया होगा । मैंने खुद पलीता लगाकर स्कूल की छत को उड़ा दिया होगा । मैं किसी विद्यार्थी को तमाचा भी नहीं मारता । शाला के बरामदे में मेरी गृहस्थी थी । आश्रय लेने के लिए इस उजाड़ थाने में आना पड़ा । मैं तो नहीं आ रहा था, कोटवार और जिवराखन साहू ने जोर दिया । आखिर कहाँ जाता । "[1] उनके इस वक्तव्य से उनकी कुंठीत मानसिकता का दर्शन होता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में जिवराखन की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । उसकी पत्नी डेरहिन और उसमें हर दिन झगड़ा होते रहता है । वह अपनी पत्नी पर अन्याय-अत्याचार करता है । उसके अन्याय-अत्याचारों से तंग आकर डेरहिन घर से भाग जाती है । वह थाने में उसके भाग जाने की रिपोर्ट दर्ज करवाता है । उसे लगता है कि उसकी पत्नी किसी गैर मर्द के साथ भाग गई है । पत्नी का किसी गैर मर्द के साथ भाग जाना, इसे वह सह नहीं सकता । उसे अपने पुरुषार्थ पर गहरी चोट महसूस होती है । उसे अपने में कमी महसूस होती है । इसका गहरा परिणाम उसके मन और बर्ताव पर पड़ता है । इसमें से ही उसमें कुंठा उत्पन्न होती है और उसकी मानसिकता कुंठाग्रस्त बन जाती है । उसके कुंठा के मूल में पारिवारिक झगड़े, संदेह और वैयक्तिक अक्षमता है । वह पुलिस के हाथों दोनों को मार देना चाहता है । ताकि दोनों कहीं भी सुख की जिंदगी ना जी सके । उसकी धारणा है कि डेरहिन के मरने के बाद ही मैं सुख से जी सकता हूँ । इसलिए वह दरोगा से कहता है - " डेरहिन जल्दी मर जायेगी तो मैं अधिक दिन सुख से जियूँगा । मेरे को छोड़ वह दूसरे के साथ रहती है । "[2] उसके इस वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि उसका मन कुंठाग्रस्त है ।

' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में रघुवर प्रसाद की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । वे एक महाविद्यालय में अध्यापक हैं । उनका वेतन बहुत ही कम है । इसलिए वे अधिक पैसे गाँव की ओर भेज नहीं सकते हैं । उनके पिता अधिक पैसों की माँग करते हैं, पर वे उस माँग को पूरा नहीं कर

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 37
2. वही, पृष्ठ - 211

पाते हैं । इसलिए उनमें अर्थ की कुंठा निर्माण हो जाती है । उनके कुंठा के मूल में अर्थ का अभाव है । उनकी मानसिकता कुंठाग्रस्त बन जाती है । इस कुंठा के कारण वे अपने-आप को पिता के सामने कम समझने लगते हैं और मैं एक अच्छा पुत्र नहीं हूँ, ऐसा उन्हें लगता है । उनके इस कुंठाग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " उसका वेतन अच्छा होता तो वह बताता कि एक पुत्र अपनी पिता की किस तरह परवाह करता है । पिता की छोटी-छोटी अपेक्षाओं के सामने वह असहाय हो जाता था कि वह अच्छा पुत्र नहीं समझा जा रहा है । " [1] इसमें से उनकी कुंठाग्रस्त मानसिकता का दर्शन होता है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । इस कुंठा के मूल में अर्थ का अभाव, गरीबी, हीनता की भावना, संदेह, पारिवारिक झगड़े और वैयक्तिक अक्षमता है । इस कुंठा के कारण उन पर निराशा और उदासी के बादल छाये हुए हैं । इस कुंठा के कारण उनके बर्ताव और व्यवहार में बदलाव आया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप से चित्रित किया है । विवेच्य उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण अधिक मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

5.5.2 भयग्रस्त मानसिकता और युवा वर्ग :-

वॉटसन ने भय को मुख्य संवेग माना है । डॉ. जे. डी. शर्मा लिखते हैं - " मॅकडुगल तथा अन्य वृत्ति मनोवैज्ञानिकों ने भय को पलायनवृत्ति माना है " [2] जब व्यक्ति के जीवन में असुरक्षा की भावना निर्माण होती है तब भय का निर्माण होता है और व्यक्ति में उस परिस्थिति से पलायन की प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है । भय के दो प्रकार होते हैं - साधारण और असाधारण । साधारण भय क्षणिक होता है और परिस्थिति के बदलते ही समाप्त हो जाता है । परंतु असाधारण भय या दुर्भिती चरमसीमा का भय होता है और रोगमूलक होता है । व्यक्ति विकास के साथ भय निर्माण करनेवाली स्थितियाँ बदलती है । प्रत्यक्ष वस्तु या प्रसंग के भय से अधिक उनके काल्पनिक भय की तीव्रता अधिक होती

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - दीवार में एक खिड़की रहती थी, पृष्ठ - 30
2. डॉ. जे. डी.शर्मा - सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ - 663

है । बचपन के भय के परिणाम दीर्घकालीन होते हैं । वैसे भय के सुखद अनुभव नहीं होते । फिर भी जीवन में उसकी उपयुक्तता होती है । भय के कारण व्यक्ति जागरुक होता है । उसके बर्ताव पर नियंत्रण आ जाता है । विकृत भय का चरमसीमा का भय रोगमूलक होते हैं । कभी-कभी यह भय इतना प्रबल रूप धारण करता है कि व्यक्ति का व्यवहार तथा जीवन-शैली को बदल देता है । भय के प्रकारों के संदर्भ में डॉ. जे. डी. शर्मा लिखते हैं - " विभिन्न प्रकार के उत्तेजकों के आधार पर इस भय के अनेक प्रकार होते हैं । जंतुभीति ZooPhobia , विषभीति ToxoPhobia, भीड़भीति OchloPhobia, रोगभीति PathoPhobia, बंदस्थानभीति ClaustroPhobia, खुले स्थान की भीति AgoraPhobia, ऊँचे स्थान की भीति AcroPhobia " [1] विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता भयग्रस्त है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में संतू बाबू के पत्नी की मानसिकता भयग्रस्त है । जब वह घर में अकेली होती है तब उसे भय लगता है । वह जवान और सुंदर है । उसे लगता है कि कोई अकेलेपन का फायदा उठाकर शरीर को भोग तो नहीं लेगा । इसलिए वह जब घर में अकेली होती है तब पूरे घर को बंद कर लेती है । ताकि कोई अजनबी घर में ना घुसे । इसमें से ही उसकी मानसिकता भयग्रस्त बन जाती है । उसके बर्ताव में परिवर्तन आता है । उसका भय साधारण, क्षणिक और काल्पनिक है । उसकी भयग्रस्त मानसिकता के संदर्भ में संतू बाबू कहते हैं - " पत्नी डरपोक थी । जब वह घर पर अकेली होती तब अपने को वह पूरे घर में बंद कर लेती थी । रात को घर पर अकेली रहना वह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी । " [2] संतू बाबू के इस वक्तव्य से उनके पत्नी की मानसिकता भयग्रस्त है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में गुरुजी के पत्नी की मानसिकता भयग्रस्त है । उसे अँधेरे का भय लगता है । गुरुजी थाने में अपने परिवार समवेत रहने आये हैं । उनका घर याने थाना गाँव से हटकर

---

1. डॉ. जे. डी.शर्मा - सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ - 138
2. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 226

है । रात को कुछ लोग उनके घर की ओर आते हुए दिखाई देते हैं । पत्नी को लगता है कि चोर या गुंड़ागर्दी करने वाले लोग ही घर की ओर आ रहे हैं । वे लोग अँधेरे का फायदा उठाकर पूरे परिवार को मार डालेंगे और अपने शरीर को भोग लेंगे, ऐसा उसे लगता है । इसलिए वह अपनी बेटी को लेकर एक कोने में बैठ जाती है । ताकि उन लोगों की नजर उनपर ना पड़े । इसमें से ही उसकी मानसिकता भयग्रस्त बन जाती है और उसका परिणाम उसके बर्ताव पर पड़ता है । उसका भय साधारण और क्षणिक है । उसमें काल्पनिक भय का अधिक्य है । उसके भय के मूल में अँधेरा है । उसके इस भयग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " मुन्नी सींकचे पकड़ी, आते हुए आदमियों को देख रही थी । अम्मा ने मुन्नी का हाथ पकड़ा और एक कोने में जा बैठी । ताकि बाहर से उनपर नजर न पड़े "[1] इसमें से गुरुजी के पत्नी की भयग्रस्त मानसिकता का दर्शन होता है ।

' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में रघुवर प्रसाद की मानसिकता भयग्रस्त है । साधू उनके घर के सामने हाथी को छोड़कर दूसरी गली में अपने काम के लिए जाता है । घर के सामने अकेले खड़े हाथी को देखकर उनके मन में भय का निर्माण होता है । उन्हें लगता है कि हाथी लोगों को तकलीफ पहुचायेगा या किसी की जान लेगा या किसी का नुकसान करेगा उसकी सारी जिम्मेदारी अपने पर पड़ेगी । झगड़े होंगे । कोर्ट-कचेरी, जेल का मुँह देखना पड़ेगा । इसमें से ही उनकी मानसिकता भयग्रस्त बन जाती है । उनका भय साधारण, क्षणिक और काल्पनिक है । उनके भयग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " रघुवर प्रसाद हाथी को ताकते हुए बैठे थे । हाथी पहले वहीं पर इधर-उधर होता रहा । फिर थोड़ा आगे-पीछे चलने लगा । रघुवर प्रसाद को भय लग रहा था । कुछ होता तो जिम्मेदारी रघुवर प्रसाद की होती । रघुवर प्रसाद सोच रहे थे कि वे अब कभी हाथी पर नहीं बैठेंगे । "[2] इसमें से रघुवर प्रसाद की भयग्रस्त मानसिकता स्पष्ट हो जाती है ।

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 24
2. विनोदकुमार शुक्ल - दीवार में एक खिड़की रहती थी, पृष्ठ - 79

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता भयग्रस्त है । इस भय के मूल में अंधेरा और अकेलापन है । इस भय में काल्पनिकता का अधिक्य है और वास्तविकता का कम । यह भय साधारण और क्षणिक है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप से चित्रित किया है । विवेच्य उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ परिलक्षित होता है ।

5.5.3 सहानुभूतिवादी मानसिकता और युवा वर्ग :-

शिक्षा तथा अनुभव में इतना अन्तर्भाव होता है कि किसी व्यक्ति के मन में किसी भावना का अनुभव होता है । दूसरे व्यक्ति के प्रति हमदर्दी या अपनापन जताना ही सहानुभूति है । इस संदर्भ में डॉ. पद्मा चामले लिखती है - " सहानुभूति एक प्रकार का भावनिक संवाहन (इण्ड़क्शन) ही है । किसी को रोते देखकर स्वयं शोकातुर हो जाना या किसी का दु:ख देखकर उसे अपना दु:ख समझना ही सहानुभूति है ।"[1] सहानुभूति व्यक्ति को कृतिप्रवण बनाती है और बर्ताव की दिशा निश्चित करती है । सामाजिक बर्ताव को सुकर बनाने में सहानुभूति बहुत उपयुक्त है । क्योंकि समाज में परस्पर सहानुभूति, प्रेम हो तो एक-दूसरे के विचार, भावना, कृति आदि को समझकर सामाजिक ऐक्य के निर्माण का मार्ग सुकर बन सकता है । विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता सहानुभूतिवादी है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में संतू बाबू की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । बेसहारा, गरीब, मजदूर, असहाय लोगों को देखकर उनकी मानसिकता सहानुभूतिवादी बन जाती है । उनका दु:ख वे अपना दु:ख समझते हैं । वे केवल उन लोगों के प्रति सहानुभूति ही नहीं रखते बल्कि उन्हें सहायता करने के लिए तत्पर भी दिखाई देते हैं । वे जिस शहर में रहते हैं उस शहर में महावीर नामक एक बूढ़ा खोमचेवाला रहता है । वे उससे परिचित हैं । महावीर मूँगफली बेचकर अपनी जिंदगी चलाता है । उसके जीवन में केवल दु:ख और अभाव ही है । एक दिन रात को घर लौटते समय उसके बाट अँधेरे में

---

1. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता, पृष्ठ - 35

खो जाते हैं । वह अँधेरे में बाट को ढूँढ़ने की कोशिश करता है । लेकिन बाट ढूँढ़ने में वह नाकाम रहता है । तभी वहाँ पर संतू बाबू आ जाते हैं । संतू बाबू के मन में महावीर के प्रति सहानुभूति है । वे महावीर से क्या खोया है ? के संदर्भ में पूछते हैं और स्वयं बाट ढूँढने में लग जाते हैं । उन्हें लगता है कि दिन-भर काम करके महावीर थका होगा । उसे आराम की जरुरत है । बाट ढूँढ़ने में उसे नीचे झुकना पड़ता है । उसके झुकने से कमर में दर्द हो सकता है । इसमें से ही उनके मन में महावीर के प्रति सहानुभूति निर्माण हो जाती है और उनकी मानसिकता सहानुभूतिवादी बन जाती है । यह मानसिकता उन्हें कृति करने के लिए उद्दीपित करती है । इस संदर्भ में स्वयं संतू बाबू कहते हैं - " उसके पास जाकर मैंने स्वयं पूछा, ' क्या खो गया है ? रुपए गिर गए ? ' महावीर मुझे पहचान गया, ' रुपए नहीं गिरे । दो सौ ग्राम और पचास ग्राम का बाट गिर गया है । ' उससे कुछ हटकर मैं भी बैठे-बैठे जमीन पर निगाह गड़ाए हाथों से टटोलते हुए बाटों को ढूँढ़ने लगा । " [1] संतू बाबू के घरमालिक शहर के बहुत बड़े डाक्टर हैं । उनके पास अनेक मरीज दूर-दूर गाँव से आते हैं । बरसात के दिनों में मरीजों को पेड़ों के नीचे भीगते हुए खड़े रहना पड़ता है । वहाँ पर बैठने और सोने की व्यवस्था नहीं है । इसलिए डाक्टर ने उनके लिए गाय का कोठा खाली कर दिया है । ताकि मरीज उसमें बैठे और सो सके । मरीजों की इस हालत को देखकर संतू बाबू के मन में मरीजों के प्रति सहानुभूति निर्माण होती है । उन्हें लगता है कि मरीज पहले से ही बीमार हैं और उसमें इस कोठे की गंदगी को उन्हें सहना पड़ता है । इससे वे और बीमार पड़ सकते हैं । उनके दु:ख उन्हें देखा नहीं जाता। इसमें से ही उनका मन मरीजों के प्रति सहानुभूतिवादी बन जाता है । पर यह सहानुभूति उन्हें मरीजों के प्रति कुछ करने के लिए उद्दीपित नहीं करती । क्योंकि उनके हाथ में कुछ नहीं है । वे केवल अपने सहानुभूति को मरीजों के प्रति बनाये रखते हैं । इस संदर्भ में वे कहते हैं - " मुझे दु:ख है कि देहात के गरीब मरीज यहाँ आते हैं । सिरस के पेड़ के नीचे पड़े रहेंगे । बरसात के लिए उधर देखिए एक पुराना गाय-कोठा उनके लिए साफ करवा दिया गया है । " [2] संतू बाबू के मन में गरीब मजदूरों के प्रति सहानुभूति है । उन्हें उनका दु:ख अपना दु:ख

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 28
2. वही, पृष्ठ - 50

लगता है । ये मजदूर अँधेरे में बिना उजाला किए ही रहते हैं । उन्हें लगता है कि इन मजदूरों के पास मिट्टी का तेल नहीं होगा । इसलिए वे उन मजदूरों को गुप्ताजी की दुकान का पता बताने उनके बस्ती में जाते हैं । ताकि मजदूर गुप्ताजी की दुकान जाकर मिट्टी का तेल खरीदे और अपने घर में उजाला करके खुशी से रहें । इसमें से ही उनके मन में गरीब और असहाय मजदूरों के प्रति सहानुभूति निर्माण होती है और उनकी मानसिकता सहानुभूतिवादी बन जाती है । इस सहानुभूति के कारण ही वे स्वयं मजदूरों की बस्ती में जाते हैं । वे मजदूरों से कहते हैं - " सुबह से आप लोग काम पर निकल जाते हैं । इतनी शाम को लौट रहे हैं । अँधेरा होनेवाला है । बहुतों के घर में कंदील और चिमनी के लिए मिट्टी का तेल नहीं होगा, तब आप अँधेरे में रहेंगे । मैं छोटापारा से आया हूँ । वहाँ गुप्ताजी की एक किराने की दुकान है । किसी से भी पूछेंगे, उस दुकान का पता आपको मिल जाएगा । वहाँ मिट्टी का तेल दो रुपए लीटर बिक रहा है ।"[1] उनका यह वक्तव्य मजदूरों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में संतू बाबू के पत्नी की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । उनके मकान मालिक डाक्टर को एक बहन है । उसे डाक्टर के घर में सब काम करना पड़ता है । वह बूढ़ी है । बूढ़ेपन में काम करके वह बहुत थक जाती है । पत्नी को लगता है कि डाक्टर और उसकी पत्नी इस औरत का भरपूर फायदा उठा रहे हैं । उसके मजबूरी का फायदा उठाकर उसपर अनेक बोझ लादे जा रहे हैं । वह बहुत दु:खी है । पत्नी को उसके प्रति सहानुभूति है । उसका दु:ख उसे देखा नहीं जाता । इसमें से ही उसकी मानसिकता सहानुभूतिवादी बन जाती है । उसकी सहानुभूति उसे डाक्टर के बहन के प्रति कुछ करने के लिए उद्दीपित करती है । वह डाक्टर के बहन का काम कम करने के लिए स्वयं डाक्टर के घर जाकर काम करती है । ताकि डाक्टर के बहन का काम कुछ कम हो और कुछ समय वह आराम करें। वह अपने पति संतू बाबू से कहती है - " मैं डाक्टर के बहन की सहायता करने उनके घर गई थी । बेचारी को बहुत काम करना पड़ता है ।"[2] उसका यह वक्तव्य डाक्टर के बहन के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता है और उसकी मानसिकता सहानुभूतिवादी है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 95
2. वही, पृष्ठ -53

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में गुरुजी की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । गरीब, बेसहारा लोगों के प्रति उनके मन में सहानुभूति है । उनके गाँव में एक बूढा कोटवार रहता है । यह कोटवार थाने की रखवाली करता है । उसके घर की हालत बड़ीही खराब है । उसका बेटा शराबी और निकम्मा होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारी कोटवार पर ही है । गुरुजी, कोटवार की स्थिति से अच्छे परिचित हैं । कोटवार अपने बीमार नाती के लिए चाय-पत्ती और गुड़ माँगने गुरुजी के घर आता है । क्योकि उसके पास अर्थ का अभाव होने के कारण वह ये सब चीजें खरीद नहीं पाता । गुरुजी ये सारी चीजें कोटवार को देते हैं और कहते हैं - " कोटवार, चाय-पत्ती और गुड़ रख लिये ? जरुरत हो तो और माँग लेना ।"[1] गुरुजी का यह वक्तव्य कोटवार के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता है और उनकी मानसिकता सहानुभूतिवादी है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में रघुवर प्रसाद की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । बच्चों के प्रति उनके मन में सहानुभूति है । वे जहाँ पर रहते हैं, वहाँ पर अन्य किराएदारों के छोटे बच्चे भी रहते हैं । ये बच्चे सुबह उनके कमरे में खिड़की से झाँककर देखते हैं । उनका देखना उन्हें बड़ा ही अच्छा लगता है । बच्चे खिड़की के नीचे ईंटों को जमाकर, उस पर ठहरकर कमरे में झाँकते हैं । एक दिन रघुवर प्रसाद खिड़की की तरफ जाते हैं । तब उन्हें खिड़की के नीचे ईंटें अस्तव्यस्त दिखाई देते हैं । बच्चों ने खिड़की के नीचे ईंटों को ठीक तरह से जमाया नहीं था । तब वे सोचते हैं कि ऐसी अवस्था में बच्चे कमरे में ठीक से देख नहीं पायेंगे । इन ईंटों पर से बच्चे फिसल कर गिर भी सकते हैं । उनको नुकसान पहुँच सकता है । इसमें से ही उनके मन में बच्चों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है और उनकी मानसिकता सहानुभूतिवादी बन जाती है । वे कुछ और ईंटों को ढूँढ़ लाते हैं और उन्हें खिड़की के नीचे ठीक तरह से जमाते हैं । ताकि सहजता से बच्चे कमरे के अंदर झाँके । उनकी सहानुभूति उन्हें बच्चों के प्रति सहायता करने के लिए उद्दीपित करती है । उनकी सहानुभूतिवादी मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " हाथों में एक-एक ईंट उठाए रघुवर प्रसाद पीछे की खिड़की की तरफ गए । खिड़की के नीचे बच्चों ने ईंटें ठीक से जमाईं नहीं थीं । आधी ईंट उठाते बनी होगी इसलिए आधी ईंटें

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 28

अधिक थीं । किनारे की ईंट के छोर पर पैर पड़ता तो ईंट पलट जाती और बच्चे गिर जाते । ईंटों को उन्होंने ठीक से जमाया ।" [1] इस परिच्छेद से उनकी सहानुभूतिवादी मानसिकता स्पष्ट हो जाती है । प्रस्तुत उपन्यास में सोनसी की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । उसके मन में प्राणियों के प्रति सहानुभूति है । उसके घर के सामने हर दिन एक गाय आती है । वह उसे नियम से रोटी देती है । उसे लगता है कि गाय भूखी होगी । उसे कोई चारा नहीं मिला होगा । उसके दो रोटी देने से गाय की भूख तो पूरी नहीं हो सकती, तो भी वह दो रोटी देकर गाय के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त कर देती है ।

इससे स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । यह सहानुभूति गरीब, बेसहारा, मजदूर, मरीज, बूढ़े व्यक्ति, बच्चे और प्राणियों के प्रति है । यह मानसिकता सामाजिक ऐक्य के लिए अनुकूल है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता का चित्रण संवेदनशीलता से किया है । विवेच्य उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

5.5.4 अपराधबोध मानसिकता और युवा वर्ग :-

अपराध-भावना न्यूनाधिक मात्रा में सभी में होती है । यह स्वैर कल्पना (फॅन्टॅसी) की उपज होती है और बैचेन अर्न्तविवेक (कॉन्शस) के कारण उत्पन्न होती है । अपराध भावनाएँ दो प्रकार की होती है - सौम्य और तीव्र । प्रसिद्ध दार्शनिक किर्केगार्ड के अनुसार - " सौम्य अपराध भावना का रचनात्मक पक्ष यह है कि वह व्यक्ति का मार्गदर्शन करता है और व्यक्तित्व की उग्र प्रवृत्तियों को रोकता है ।" [2] परंतु अपराध भावना की तीव्र अनुभूति से अपराध ग्रंथि का निर्माण होता है और व्यक्ति वर्तन विकृत हो जाता है । कभी-कभी जटिल मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती है । अपराध भावना उन सब आवेगों के साथ जुड़ी होती है, जो समाज विरोधी होते हैं । कोई अपने कार्य के लिए, कोई अपने

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - दीवार में एक खिड़की रहती थी, पृष्ठ - 13
2. डॉ. जे. डी. शर्मा - सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ - 642

कार्य की इच्छा या विचार मात्र से अपने को दोषी समझता है । विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता अपराध बोध से ग्रस्त है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में गुरुजी की मानसिकता अपराध बोध से ग्रस्त है । गुरुजी और कोटवार बंदूक को जाँचने के लिए कहीं ना कहीं निशाना लगाना चाहते हैं । ताकि बंदूक अच्छी है या खराब है यह साबित हो । इसलिए गुरुजी बंदूक लेकर जानवरों के हड्डियों के ढ़ेर पर निशाना लगाते हैं । गोली हड्डियों के ढ़ेर पर जाकर लगती है । गोली के ठीक निशाने पर लगने से ढ़ेर थोड़ा धसक जाता है और उसमें से आदमी के सिर की हड्डि निकलती है । जानवरों के ढ़ेर से आदमी के सिर की निकली हड्डि देखकर दोनों परेशान हो जाते हैं । गुरुजी को लगता है कि मैंने एक आदमी की हत्या कर दी है । वे अपने आप को अपराधी महसूस करने लगते हैं। जीवित और मृत आदमी को वे एक ही मानते हैं । गोली जीवित व्यक्ति पर चलाई जाय या मृत व्यक्ति पर चलाई जाय आखिर वह आदमी ही है, ऐसा उन्हें लगता है । इसमें से ही उनकी मानसिकता अपराधबोध से ग्रस्त बन जाती है । उनका अपराधबोध तीव्र प्रकार का है । इस अपराधबोध से वे बैचेन हो जाते हैं । उनके अपराधबोध ग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " गुरुजी का अपराधबोध बढ़ रहा था । यह अपराधबोध इतना बढ़ गया कि मन और आत्मा से हटाकर उन्होंने उसे अपनी पीठ पर लाद लिया ।"[1] इसमें गुरुजी की अपराधबोध मानसिकता स्पष्ट हो जाती है ।

' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में रघुवर प्रसाद की मानसिकता अपराधबोध से ग्रस्त है । वे एक महाविद्यालय में अध्यापक हैं । उनका वेतन बहुत ही कम है । इसलिए वे अपने घर की ओर अधिक पैसे भेज नहीं सकते हैं । उन्हें लगता है कि अधिक पैसे न भेजने के कारण माता-पिता क्या सोचेंगे ? उनका अपने पर का विश्वास टूट तो नहीं जायेगा ? माता-पिता की जरुरतों को पूरा करने में मैं असफल रहा । इसलिए मैं एक अच्छा पुत्र नहीं हूँ । इसमें से ही उनके मन में अपराध बोध का निर्माण होता है और उनकी मानसिकता अपराधबोध से ग्रस्त बन जाती है । इस अपराध बोध के कारण वे माता-पिता के सामने स्वयं को अपराधी मानते हैं और स्वयं को अच्छा पुत्र नहीं मानते । उनके इस

---

1. . विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 112

अपराधबोध से ग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " उसका वेतन अच्छा होता तो बताता कि एक पुत्र अपनी पिता की किस तरह परवाह करता है । पिता की छोटी-छोटी अपेक्षाओं के सामने वह असहाय हो जाता था कि वह अच्छा पुत्र नहीं समझा जा रहा है । " [1] इससे उनकी अपराध बोध मानसिकता स्पष्ट हो जाती है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि ' खिलेगा तो देखेंगे ' और ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता अपराधबोध से ग्रस्त है। इस अपराधबोध से ग्रस्त मानसिकता में काल्पनिकता का अधिक्य है । इस अपराधबोध के मूल में अर्थ का अभाव, वैयक्तिक अक्षमता और विचार हैं । ये युवा पात्र अपराधबोध के कारण उदास और बैचेन हो गए हैं । यह अपराधबोध तीव्र प्रकार का है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थता से चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ परिलक्षित होता है ।

5.5.5 व्यसनाधीन मानसिकता और युवा वर्ग :-

व्यसनाधीनता गंभीर सामाजिक समस्या है । चिन्ता, तनाव और विफलता से युक्त जीवन में व्यवस्थापन का अत्यंत दोषपूर्ण प्रकार है । यह विषयायोजनात्मक प्रतिक्रिया ही है । इससे समस्याओं को सुलझाने के सामान्य मार्ग में भी कठिनाई उपस्थित होती है । जीवन में उत्पन्न दु:ख, चिन्ता, तनाव, अभाव, विफलता आदि को भुलाने के लिए व्यक्ति मद्यपान करता है । मद्यपान के बिना वह जी ही नहीं सकता । परिणामत: व्यक्ति मद्यपान का आदी बन जाता है और उसकी समस्याएँ जैसी की वैसी रह जाती है । इस संदर्भ में डॉ. पद्मा चामले लिखती है - " बार-बार सेवन से व्यक्ति व्यसनाधीन बन जाता है । उसके भावावेग में तीव्रता आ जाती है । क्रियाशीलता मंद पड़ जाती है । उसका विवेक क्षीण हो जाता है । बुद्धि की संवेदनशीलता कम हो जाती है । बर्ताव पर नियंत्रण समाप्त होकर बर्ताव विकृत असामान्य बन जाता है । रोग प्रतिकार शक्ति क्षीण हो जाती है । इस प्रकार मन और शरीर दोनों पर परिणाम होता है । इतना ही नहीं आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक जीवन का भी विघटन होता है ।

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - दीवार मेंएक खिड़की रहती थी, पृष्ठ - 30

व्यसनाधीन व्यक्ति आक्रामक बनता है । अपराधी वर्तन करता है ।" [1] विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित अनेक युवा पात्र व्यसनाधीन परिलक्षित होते हैं ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में युवा क्लर्क की मानसिकता व्यसनाधीन से ग्रस्त है । उसका जीवन तनाव, चिन्ता, अभावों से ग्रस्त है । उपन्यास में उसके नाम का उल्लेख नहीं है । जीवन में व्याप्त तनावों से मुक्ति पाने के लिए वह शराब पीता है । उसे शराब पीए बगैर काम ही करने नहीं आता । इस व्यसन के कारण उसके घर की हालत और खराब हो गई है । इस व्यसन का परिणाम उसके मन और शरीर दोनों पर हुआ है । उसका बर्ताव असामान्य बन गया है । उसकी व्यसनाधीन मानसिकता के संदर्भ में संतू बाबू कहते हैं - " यह क्लर्क मरियल सा बीमार लगता था । उसे देखकर लगता था कि इसे एक साथ गाँजा, अफीम, शराब, भाँग सबका नशा चढ़ा है । इसकी आँखें चढ़ी रहती थीं । वह बाकी लोगों से कोई मतलब नहीं रखता था । हम लोग उसे घमंड़ी कहते थे । वह किसी-से घुलता-मिलता नहीं था । हमेशा अकेला रहता था । यह आदमी किसी-के लेने-देने में नहीं रहता था पर बाबू लोग बताते थे कि इसकी बीवी पड़ोसियों से उधार माँगती फिरती थी ।" [2] संतू बाबू के इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि उस युवा क्लर्क की मानसिकता व्यसनाधीन से ग्रस्त है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में घासीराम की मानसिकता व्यसनाधीन से ग्रस्त है । घासीराम कोटवार का बेटा है । उसकी हालत बड़ी ही खराब है । उसका जीवन तनाव, चिन्ता, अभावों से ग्रस्त है । इससे मुक्ति पाने के लिए वह पलायनवादी मद्यपान करता है । उसे शराब पीने की आदत है । उसे शराब के व्यसन ने निकम्मा और निष्क्रिय बना दिया है । उसका विवेक क्षीण हो गया है । उसके बुद्धि की संवेदनशीलता कम हो गई है । उसका बर्ताव विकृत और असामान्य बन गया है । उसके व्यसन के कारण उसके बच्चे की जान चली गई है । वह शराब पीने के बाद गाली-गलौच करता है और

---

1. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता, पृष्ठ - 48
2. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 158-159

लोगों से पिटता है । व्यसन ने उसके मस्तिष्क पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की है । उसका बर्ताव और व्यवहार उसकी मानसिकता व्यसनाधीन होने का उदाहरण है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता व्यसनाधीनता से ग्रस्त है । इस व्यसन के मूल में तनाव, चिन्ता और अभाव है । ये युवा पात्र जीवन में व्याप्त तनाव, चिन्ता और अभाव से मुक्ति पाने के लिए व्यसन करते हैं । इन युवा पात्रों का व्यसन पलायनवादी प्रकार का है । इस व्यसन के कारण उनका बर्ताव विकृत हो गया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

5.5.6 पलायनवादी मानसिकता और युवा वर्ग :-

जीवन में उत्पन्न दु:ख, चिन्ता, तनाव,विफलता आदि को भुलाने के लिए व्यक्ति पलायन करता है । वह इन सारी बातों से तंग आ जाता है और इसमें से उसका मन भागना चाहता है । जीवन में ऐसी स्थिति उत्पन्न होने के बाद व्यक्ति में आत्मविश्वास का ऱ्हास होने लगता है और आत्मविश्वासहीन मानसिकता में पलायन करता है । पलायन के मूल में जीवन में उत्पन्न दु:ख, चिन्ता, तनाव, झगड़े विफलता, अभाव आदि हैं । विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कई युवा पात्रों की मानसिकता पलायनवादी है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में बड़े बाबू के युवा लड़के की मानसिकता पलायनवादी है । वह घर से भाग गया है । उपन्यास में उसके नाम का उल्लेख नहीं है । वह शिक्षित है । बड़े बाबू हर समय उसे डाँटते रहते हैं । उसका अपमान करते रहते हैं । इन सारी बातों से वह तंग आ जाता है । उसके जीवन में विफलता, तनाव उत्पन्न हुआ है । वह इनमें से मुक्ति पाना चाहता है । इसमें से ही उसकी मानसिकता पलायनवादी बन जाती है । घर में उत्पन्न तनाव को भुलाने के लिए वह घर से भाग जाता है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में डेरहिन की मानसिकता पलायनवादी है । उसका पति जिवराखन है । उसमें और पति में अक्सर झगड़े होते हैं । जिवराखन उसपर अन्याय-अत्याचार करता

है । उसे मार-पीट करता है । उसके जीवन में केवल दु:ख ही दु:ख है । वह इन सारी बातों से तंग आ जाती है । वह गुरुजी से कहती है - " जिवराखन मुझको बहुत दु:ख दिया है । कलप कलप के जिये हों गुरुजी । अब दु:ख सहने की हिम्मत नहीं है । "[1] अब उसमें दु:ख सहने की ताकत नहीं है । उसका आत्मविश्वास खत्म हो गया है । वह इन सारी बातों से मुक्त होना चाहती है । इससे ही उसकी मानसिकता पलायनवादी बन जाती है । घर में उत्पन्न तनाव, विफलता, दु:ख को भुलाने के लिए आखिर वह घर से भाग जाती है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कई युवा पात्रों की मानसिकता पलायनवादी है । इस पलायनवादी मानसिकता के मूल में जीवन में उत्पन्न दु:ख, चिन्ता, तनाव, झगड़े, अभाव और विफलता है । इन सबसे मुक्ति पाने के लिए ये युवा पात्र पलायन करते हैं । उनमें आत्मविश्वास की कमी है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ परिलक्षित होता है ।

5.5.7 शक्की मानसिकता और युवा वर्ग :-

मनुष्य में जब एक-दूसरे के प्रति विश्वास कम होने लगता है तो मन में शक के बादल मँड़राने लगते हैं । इस स्थिति में मन निम्नस्तर की ओर बढ़ता है और अपने प्रिय से प्रिय व्यक्ति के प्रति भी बुरा सोचने लगता है । मन पर बुरे विचारों का कब्जा होता है और व्यक्ति नकारात्मक सोचने लगता है । ऐसी स्थिति में संबंधों के टूटने की आशंका होती है । मन में शक निर्माण होने के मूल में ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, विश्वास की कमी आदि होते हैं । विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता शक्की है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में संतू बाबू की मानसिकता शक्की है । उनकी पत्नी हरदिन डाक्टर के घर जाती है और वहाँ काम करती है । यह उन्हें अच्छा नहीं लगता है । उन्हें लगता है कि मेरे

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 88

परिवार का उपयोग स्वार्थ से किया जा रहा है । इसमें से ही उनकी मानसिकता शक्की बन जाती है । वे अच्छे आदमी हैं पर शक करते हैं । वे कहते हैं - " मैं बहुत शक्की हो गया था । मुझमें यह शक घर कर गया था कि दूसरों के द्वारा मेरे परिवार का उपयोग स्वार्थ से किया जा रहा है । यह वहम् बढ़ता जा रहा था कि मेरा दुरुपयोग हो रहा है । हर वह आदमी जो अच्छा व्यवहार करता है, तब सोचता हूँ कि इसका कोई बड़ा स्वार्थ है, बेवकूफ बना रहा है । " [1] उनके इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि उनकी मानसिकता शक्की है ।

' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में जिवराखन की मानसिकता शक्की है । उसकी पत्नी डेरहिन उसके अन्याय-अत्याचार से तंग आकर घर से भाग जाती है । तब उसकी मानसिकता शक्की बन जाती है । उसे लगता है कि अपनी पत्नी उसके प्रेमी के साथ भाग गई है । वह थाने में इसकी रिपोर्ट लिखवाता है और दरोगा से उन दोनों को जान से मारने की प्रार्थना करता है । उसकी शक्की मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं -" जिवराखन को संदेह था कि डेरहिन अपने यार के साथ भाग गई है । वह दोनों को जान से मार देना चाहता है । " [2] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जिवराखन की मानसिकता शक्की है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता शक्की है । इस शक के मूल में ईर्ष्या, द्वेष,स्वार्थ, विश्वास की कमी और अविचार है । इस शक में काल्पनिकता का अधिक्य है । इस शक के कारण ये युवा पात्र नकारात्मक सोचते हैं । इसके कारण उनके बर्ताव में बदलाव आया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थता से चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यासों में इस मानसिकता का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

5.5.8 हीनता की मानसिकता और युवा वर्ग :-

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 246
2. विनोदकुमार शुक्ल - खिलेगा तो देखेंगे, पृष्ठ - 90

' हीनता ' इस शब्द का जन्मदाता एड़लर है । उनके अनुसार -" प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार की, शारीरिक, मानसिक, क्रियात्मक या अन्य प्रकार की कमी होती है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यानुसार कमी की पूर्ती कर आत्मस्थापन का प्रयास करता है । इस प्रयास में बाधा उपस्थित होने से व्यक्ति में हीनता की भावना निर्माण होती है और इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति हीनता ग्रंथि से आक्रांत होकर विकारग्रस्त हो जाता है । आत्मविश्वास खो बैठता है और जीवन में सफलतापूर्वक समायोजन कर नहीं सकता । " [1] दूसरे प्रकार के हीनता-ग्रंथि ग्रस्त व्यक्ति अपनी हीनता को छिपाने के लिए श्रेष्ठता का दंभ करते हैं। श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अनुचित मार्ग का अवलंब करते हैं । परिणामत: आक्रमक, अहंकारी तथा आत्म प्रशंसक बनते हैं। अपराध, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा आदि का निर्माण भी करते हैं । परिस्थिति जटिल हो जाने पर निराश होकर आत्महत्या के लिए उपयुक्त हो जाते हैं । कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपनी हीन भावना का उदात्तीकरण करके श्रेष्ठ कलाकार, चित्रकार, कवि, समाजसुधारक आदि बनते हैं और हीनभावना से मुक्ति पाने का प्रयत्न करते हैं। ' मानविकी पारिभाषिक कोश ' के अनुसार - " हीनत्व भाव एक प्रकार से अपनी आलोचना है। हीनत्व भाव आंतरिक है और इसका संबंध संवेगात्मक अनुभूति से है । इसमें योग्यायोग्यता का प्रश्न नहीं है। सब गुण विशेषता के रहने पर भी हीनत्व भाव जम सकता है। " [2] विनोदकुमार शुक्ल ने अपने उपन्यास में हीनता से ग्रस्त युवा पात्र की मानसिकता को भी यथार्थता से चित्रित किया है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में संतू बाबू की मानसिकता हीनता ग्रंथि से ग्रस्त है । वे दिखने में उतने अच्छे नहीं हैं । इसलिए वे हरसमय अपने आप को दूसरों से कम समझने लगते हैं । इसमें से ही उनके मन में हीनता की ग्रंथि का निर्माण होता है और उनकी मानसिकता हीनता से ग्रस्त बन जाती है । शारीरिक कमी के कारण उनमें हीनता की ग्रंथि निर्माण हो गई है । वे हरसमय अपने आप को शीशे में देखकर दूसरों से कम समझते हैं । वे कहते हैं -"शीशे में अपने को देखकर हमेशा मुझे लगता कि मैं संपत की तरह ठीक नहीं दिख रहा हूँ । " [3] उन्हें लगता है कि अच्छी और महँगी चीजों का उपभोग

---

1. डॉ. देवराज उपाध्याय - आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान, पृष्ठ - 60
2. सं. डॉ. नगेंद्र - मानविकी पारिभाषिक कोश, पृष्ठ - 148
3. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 19

केवल उच्चवर्ग ही ले सकता है । निम्नवर्ग उसका उपभोग ले नहीं सकता । क्योंकि यह चीजें महँगी और शुद्ध होती है और उसे खरीदने की पात्रता निम्नवर्ग की नहीं है । उनकी इस सोच से उनमें हीनता की ग्रंथि निर्माण हो जाती है । वे उच्चवर्ग की तुलना में अपने-आप को कम समझते हैं । क्योंकि वे निम्नवर्ग में से हैं । इसलिए वे कहते हैं - " अच्छी चीजें महँगी होती थीं और शुद्ध होकर बहुत महँगी । इसलिए उनका उपभोग केवल उच्चवर्ग तक ही सीमित होता था । "[1] उनके इस वक्तव्य से उनकी हीनता से ग्रस्त मानसिकता स्पष्ट हो जाती है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता हीनता से ग्रस्त है । इस मानसिकता के मूल में वैयक्तिक अक्षमता और अर्थ का अभाव है । हीनता के कारण इस युवा पात्र का आत्मविश्वास खत्म हुआ है और जीवन उदास बन गया है । इसके कारण उनके बर्ताव और विचारों में बदलाव आया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थता से चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में इस मानसिकता का चित्रण कम मात्रा में हुआ परिलक्षित होता है ।

5.5.9 अहंग्रस्त मानसिकता और युवा वर्ग :-

व्यक्तित्व के निर्माण में अहं महत्त्वपूर्ण तत्त्व है । उपनिषद्कार तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ने उसकी महत्ता को स्वीकार किया है । डॉ. सुजाता के अनुसार - " उपनिषद्कारों ने व्यक्तित्व के निर्माण को मन, बुद्धि और अहंकार जन्म माना है तो मनोवैज्ञानिकों ने इद, इगो और सुपर इगो को व्यक्तित्व निर्माण की आवश्यक इकाई माना है । उपनिषद्कारों का ' अहंकार ' और मनोवैज्ञानिकों का ' अहं ' एक ही है । "[2] ' मानक हिंदी कोश ' के अनुसार - ' अहं ' का अर्थ है - " मनुष्य में होनेवाला यह ज्ञान या धारणा कि ' मैं हूँ ' या ओरों से मेरी पृथक और स्वतंत्र सत्ता है । अपनी अस्तित्व की कल्पना या भान । "[3] ' अहंकार 'अंतकरण की वह स्वार्थ-प्रवृत्ति, जिससे मनुष्य समझता है कि मैं कुछ हूँ या

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 36
2. डॉ. सुजाता - हिंदी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृष्ठ - 14
3. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, खंड़ - 1, पृष्ठ - 232

कुछ करता हूँ । डॉ. पद्मा चामले के अनुसार - " वैयक्तिक भिन्नता या बाह्यकालीन परिस्थितियों या वातावरण व्यक्ति के ' अहं ' को तुष्ट और पुष्ट करते हैं । " [1] अहं के अत्याधिक विस्तार से अहंभाव का निर्माण होता है । तीव्र अहंभाव से श्रेष्ठता ग्रंथि उत्पन्न होती है और घोर अहंभाव से प्रेरित होकर व्यक्ति दूसरों का अपमान-अवहेलना करता है । पारिवारिक या सामाजिक विधि-निषेधों के कारण अहं तुष्टि में बाधा उपस्थित हो जाती है । या अहं आहत हो जाता है तो क्रोध, प्रतिशोध, अपराध की प्रवृत्ति विकसित होती है ।

विनोदकुमार शुक्ल के ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में डाक्टर के भतीजे की मानसिकता अहंग्रस्त है । उपन्यास में उसके नाम का उल्लेख नहीं है । उसकी आयु बाईस-तेईस वर्ष की है । वह उच्चवर्गीय युवा वर्ग की कोटि में आता है । उसके घर की स्थिति बहुत ही अच्छी है । ऐश्वर्य, संपन्नता, ऐषआराम सब कुछ उसके पास है । वह अपने आप को सबसे अलग और विशेष समझता है । उसे लगता है कि मैं उच्चवर्ग का हूँ, मैं कुछ हूँ, मैं कुछ भी कर सकता हूँ, मैं जो कहूँ वही सही है । उसके इस सोच से ही उसकी मानसिकता अहंग्रस्त बन गई है । उसमें घोर अहंभाव का निर्माण हुआ है । वह निम्नवर्ग के लोगों की उपेक्षा करता है । संतू बाबू के घर की छत बरसात के दिनों में टपकती है । इस बात को वे मकान मालिक याने डाक्टर से कहना चाहते हैं । लेकिन डाक्टर की भेंट नहीं हो पाती । तभी उन्हें डाक्टर का युवा भतीजा दिखाई देता है । डाक्टर नहीं तो भतीजा तो है इस सोच में वे अपनी परेशानी भतीजे से कहते हैं । भतीजा उनकी ओर ध्यान नहीं देता । वह संतू बाबू की ओर केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखता है । क्योंकि संतू बाबू निम्नमध्यवर्ग में से हैं । संतू बाबू के लाख कहने पर भी वह छत की दुरुस्ती के बारे में कुछ कहता नहीं । वह संतू बाबू से कहता है - " मुझे मालूम है, इतनी जल्दी खपरे नहीं सूखेंगे । कम-से-कम तीन दिन की लगातार धूप चाहिए । अब आप जाइए । " [2] उसके इस वक्तव्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी मानसिकता अहंग्रस्त है ।

---

1. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता - पृष्ठ 44
2. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 62

निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता अहंग्रस्त है । इस मानसिकता के मूल में ऐश्वर्य, संपन्नता, अभिमान और ' मैं ' की धारणा है । यह अहं घोर है । इसलिए यह युवा पात्र निम्नवर्ग और निम्नमध्यवर्ग की उपेक्षा करता है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थता से चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में इस मानसिकता का चित्रण कम मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

5.5.10 बेरोजगार-मानसिकता और युवा वर्ग :-

' बेरोजगार ' शब्द मूलत: फारसी का शब्द है । ' रोजगार ' इस फारसी शब्द के साथ ' बे ' उपसर्ग जोड़ने से यह शब्द बनता है । रोजगार का अर्थ है - " जीविका, धनसंचय का काम, उद्यम व्यवसाय। " [1] इसमें ' बे ' उपसर्ग जोड़ने से अर्थ होता है - " जिसके पास धंधा न हो, अनुद्यमी, व्यवसायहीन, बेकार " [2] अंग्रेजी में इसे ' अनएम्पलॉयड़ ' Unemployed शब्द प्रयुक्त होता है । उसका अर्थ है - " निरूद्यम, निरुद्योग, वृत्तिहीन, अनियुक्त, बेकार, बेरोजगार । " [3] डॉ. पद्मा चामले के अनुसार - " बेरोजगार वह होता है जो काम तो करना चाहता है, पर काम उपलब्ध नहीं होता " [4] आज बेरोजगारी का क्षेत्र बड़ा व्यापक बन गया है । बेरोजगारी न केवल आर्थिक ढ़ाँचे के लिए, बल्कि समाज व्यवस्था तथा शासन तंत्र के लिए भी एक भयंकर खतरा बन गई है । बेरोजगारी का संसर्ग व्यक्ति, परिवार, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षितता आदि सभी से होता है । परिणामत: युवा मन में एक गहरी निराशा और आक्रोश की भावना उत्पन्न हो जाती है । बेरोजगारी युवा मन में तनाव, चिन्ता, अभाव, अपमान और हताशा उत्पन्न करती है । यह हताशा युवा मानसिकता को जड़ बना देती है । परिणामत: वैचारिक क्षमता नष्ट हो जाती है । शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है । कई बार बेरोजगारी युवकों को संवेदनशून्य बनाती है । कभी जीवन निरर्थक होने का एहसास होने लगता है

---

1. सं. कालिकाप्रसाद - बृहत हिंदी कोश, पृष्ठ - 969
2. सं. मुहम्मद मुस्तफा खाँ मद्दाह - उर्दू हिंदी कोश, पृष्ठ - 104
3. सं. डॉ. हरदेव बाहरी - अँग्रेजी हिंदी कोश, भाग 2, पृष्ठ - 2040
4. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता - पृष्ठ 130

और वह जीवन के सुख-आनंद का उपभोग कर नहीं सकता । बेरोजगारी युवा मन को समाज विघातक कृत्य करने के लिए मजबूर करती है । कभी बेरोजगारी से उत्पन्न खालीपन को निपटने के लिए नशापान, जुआ, वेश्यागमन आदि का सहारा लिया जाता है और नैतिक दृष्टि से उसका पतन हो जाता है । विनोदकुमार शुक्ल ने अपने उपन्यास में बेरोजगारी से त्रस्त युवा पात्र की मानसिकता को चित्रित किया है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में बेरोजगार युवा लड़के की मानसिकता का चित्रण है । उपन्यास में उसके नाम का उल्लेख नहीं है । उसकी शिक्षा बी. ए. तक हुई है । वह नौकरी की तलाश में है । वह हर-दिन का अखबार देखते रहता है ताकि उसमें कोई नौकरी का विज्ञापन हो । लेकिन उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिलती है । इसमें से ही उसकी मानसिकता बेरोजगारी से ग्रस्त बन जाती है । उसकी वैचारिक क्षमता नष्ट हो जाती है । उसका मन संवेदनशून्य बन जाता है । उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है और वह जीवन के सही आनंद का ठीक तरह से उपभोग नहीं ले सकता । बेरोजगारी के कारण उसका जीवन के प्रति विश्वास कम हो गया है । वह संतू बाबू से कहता है - " कदमों से दूरी नापना गलत काम है । पहले जिंदगी के प्रति मेरे मन में उत्साह था इसलिए लंबे कदम रखता था । अब उत्साह कम हो जाने के कारण छोटे-छोटे कदम रखना पड़ता है । "[1] उसके इस वक्तव्य से उसकी मानसिकता बेरोजगारी से ग्रस्त है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता बेरोजगारी से ग्रस्त है । यह युवा पात्र उच्चशिक्षित है । इस मानसिकता के मूल में व्यवस्था है । बेरोजगारी के कारण उसका जिंदगी के प्रति उत्साह कम हुआ है । उसका जीवन उदास बन गया है तो भी उसमें आशा की कमी नहीं है । उसका मन संवेदनशून्य बन गया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में इस मानसिकता का चित्रण कम मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 228

5.5.11 प्रतिशोध की मानसिकता और युवा वर्ग :-

प्रतिशोध-ग्रंथि के मूल में प्रतिशोध भावना होती है । अपमान, उपहास, बदनामी, प्रेरणापूर्ति या उद्दिष्टपूर्ति में बाधा उपस्थित करनेवाले या नुकसान पहुँचानेवाले व्यक्ति के प्रति, पीड़ित व्यक्ति बदले की, प्रतिशोध की उद्दाम भावना से आक्रांत हो जाता है । वह जाने-अनजाने में ऐसा काम कर बैठता है कि जिससे वह अपनी अप्रसन्नता या कोपभावना के आलंबन को हानि पहुँचाकर उससे बदला लिया करता है । प्रतिशोध में क्रोध का अधिक्य होता है । विनोदकुमार शुक्ल ने अपने उपन्यास में प्रतिशोध से ग्रस्त युवा पात्र की मानसिकता को चित्रित किया है ।

' नौकर की कमीज ' उपन्यास में संतू बाबू की मानसिकता प्रतिशोध से ग्रस्त है । उनको धोखे से बड़े बाबू साहब के घर ले जाते हैं और वहाँ पर उन्हें जबरदस्ती से नौकर की कमीज पहनाई जाती है । इस घटना का उनके मन पर गहरा परिणाम होता है । इस घटना से वे अपमानित हो जाते हैं । इसमें से ही उनकी मानसिकता प्रतिशोध से ग्रस्त बन जाती है । उनके मन में प्रतिशोध-ग्रंथि का निर्माण हो जाता है । उन्हें साहब तथा बड़े बाबू पर गुस्सा आ जाता है । पर वे उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकते हैं । वे प्रतिशोध लेना चाहते हैं पर प्रतिशोध किससे ले ? क्योंकि साहब और बड़े बाबू के नियंत्रण में पूरा कार्यालय है । अगर उनके विरोध में कुछ करें तो नुकसान उनका ही होनेवाला है । इसलिए वे नौकर की कमीज पर प्रतिशोध लेना चाहते हैं । जो उन्हें पहनाई गई थी । इसलिए वे उस कमीज के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं और उसे आग लगाते हैं । उनका प्रतिशोध प्रतीकात्मक है । कमीज को आग लगाकर साहब और बड़े बाबू का प्रतिशोध लिया, ऐसा उन्हें लगता है । वे कहते हैं - " कमीज के टुकड़ों की ढ़ेरी में आग लगा दी । भक् से लपट उठी । हवा तेज चल रही थी । इसलिए ढ़ेरी से अलग होकर एक-दो टुकड़े बाहर निकल आए थे । मैंने उन्हें फिर आग में डाल दिया । "[1] उनके इस वक्तव्य से उनकी मानसिकता प्रतिशोध से ग्रस्त है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता प्रतिशोध से ग्रस्त है । बदनामी और अपमान के कारण इस युवा पात्र में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हुई

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - नौकर की कमीज, पृष्ठ - 252

है । इस युवा पात्र के प्रतिशोध में क्रोध का अधिक्य है । यह प्रतिशोध प्रतीकात्मक है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थता से चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में इस मानसिकता का चित्रण कम मात्रा में हुआ परिलक्षित होता है ।

5.5.12 अकेलेपन की मानसिकता और युवा वर्ग :-

वर्तमान समाज जीवन में अकेलेपन की समस्या बढ़ रही है । नगर के विशाल विस्तार में भटकता हुआ आदमी संबंधों के टूटते जाने के कारण एक ऐसी मनस्थिति पर पहुँच जाता है जहाँ उसे नितांत अकेलापन महसूस होता है । इस अवस्था में वह असहाय और दयनीय बनता है और उदास रहने लगता है । अपने प्रिय व्यक्ति के खो जाने पर या उसकी मृत्यु होने पर या उसके दूर जाने पर या नये स्थान पर या सहानुभूति, आत्मीयता, आस्था के न होने पर व्यक्ति की मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त बन जाती है । उसका मन स्वयं को अकेला मानने लगता है । मेरा इस विश्व में कोई नहीं है, यह विचार उसके मन में भरा हुआ रहता है । तीव्र अकेलापन रोगमूलक होता है । विनोदकुमार शुक्ल ने अपने उपन्यास में अकेलेपन से ग्रस्त युवा पात्र की मानसिकता को चित्रित किया है ।

' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में रघुवर प्रसाद की मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त है । उनकी पत्नी सोनसी गाँव चली गई है । उसके जाने से उनमें नितांत अकेलापन निर्माण हो गया है । उस नगर में उनके प्रति आत्मीयता, आस्था और प्रेम जताने वाली सोनसी ही है और उसके गाँव जाने से यह सब खत्म हुआ है । वे इन सब बातों के आदी हो गए हैं । पर उसके जाने से उन्हें यह सब नहीं मिल पाता । इसमें से ही उनके मन में अकेलापन निर्माण हो जाता है और उनकी मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त बन जाती है । इस अकेलेपन में उन्हें किसी भी बात में रूचि नहीं रहती - जैसे, खाना खाने में, महाविद्यालय जाने में । उनका मन उदास रहने लगता है । उन्हें हर समय सोनसी की याद आती है । हर वस्तु में उन्हें सोनसी दिखाई देती है । उनके पूरे मस्तिष्क पर सोनसी छा गई है । उनका अकेलापन स्वाभाविक और सामान्य है । उनके इस अकेलेपन से ग्रस्त मानसिकता को चित्रित करते हुए लेखक लिखते हैं - " आज के दिन भी सोनसी की याद आ रही थी । आते-जाते लोगों, पेड़ों, मकानों,

सड़क, आवाजों को देखते-सुनते थे पर सोनसी की याद आती थी । सड़क पर किसी-से बात करते तो याद आती । "[1] इससे स्पष्ट है कि रघुवर प्रसाद की मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त है । यह अकेलापन प्रिय व्यक्ति के दूर जाने के कारण उत्पन्न हुआ है । इस मानसिकता के मूल में सहानुभूति, आस्था और आत्मीयता का अभाव है । इस अकेलेपन के कारण यह युवा पात्र उदास और असहाय बन गया है । विनोदकुमार शुक्ल ने इस मानसिकता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में इस मानसिकता का चित्रण कम मात्रा में हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

निष्कर्ष :-

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित युवा-मानसिकता पर दृष्टिपात करने पर मेरा यह विनम्र निष्कर्ष है कि विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित अधिकांश पात्र युवा हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों में इन युवा पात्रों की मानसिकता का भी चित्रण किया है । इन युवा पात्रों की मानसिकता विविध प्रकार की है । उनकी मानसिकता का प्रभाव उनके बर्ताव पर भी पड़ा है । उनका बर्ताव उनकी मानसिकता को सहजता से स्पष्ट करता है । विवेच्य उपन्यासों में चित्रित इन युवा पात्रों की मानसिकता के मूल में अनेक कारण हैं, जिनकी वजह से ही उनकी मानसिकता उस प्रकार की बनी हुई है ।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता कुंठाग्रस्त है । इस कुंठा के मूल में अर्थ का अभाव, गरीबी, हीनता की भावना, संदेह, पारिवारिक झगड़े और वैयक्तिक अक्षमता है । इस कुंठा के कारण इन युवा पात्रों पर निराशा और उदासी के बादल छाये हुए हैं । इस कुंठा के कारण उनके बर्ताव में बदलाव आया है । विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता भयग्रस्त है । इस भय के मूल में अँधेरा और अकेलापन है । इस भय में काल्पनिकता का अधिक्य है और

---

1. विनोदकुमार शुक्ल - दीवार में एक खिड़की रहती थी, पृष्ठ - 162

वास्तविकता का कम । यह भय साधारण और क्षणिक है । विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता सहानुभूतिवादी है । यह सहानुभूति गरीब, बेसहारा, मजदूर, मरीज, बूढ़े व्यक्ति, बच्चे और प्राणियों के प्रति है । यह मानसिकता सामाजिक ऐक्य के लिए अनुकूल है । ' खिलेगा तो देखेंगे ' और ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता अपराधबोध से ग्रस्त है । इस अपराधबोध से ग्रस्त मानसिकता में काल्पनिकता का अधिक्य है और वास्तविकता कम । इस अपराधबोध के मूल में अर्थ का अभाव, वैयक्तिक अक्षमता और विचार है । ये युवा पात्र अपराधबोध के कारण उदास और बैचेन हो गए हैं । यह अपराधबोध तीव्र प्रकार का है । ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कई युवा पात्रों की मानसिकता व्यसनाधीनता से ग्रस्त है । इस व्यसन के मूल में तनाव, चिन्ता और अभाव है । ये युवा पात्र जीवन में व्याप्त तनाव, चिन्ता और अभाव से मुक्ति पाने के लिए व्यसन करते हैं । इन युवा पात्रों का व्यसन पलायनवादी प्रकार का है । इस व्यसन के कारण उनका बर्ताव विकृत हो गया है । ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कई युवा पात्रों की मानसिकता पलायनवादी है । इस पलायनवादी मानसिकता के मूल में जीवन में उत्पन्न दु:ख, चिन्ता,तनाव, झगड़े, अभाव और विफलता है । इन सब से मुक्ति पाने के लिए ये युवा पात्र पलायन करते हैं । उनमें आत्मविश्वास की कमी है । ' नौकर की कमीज ' और ' खिलेगा तो देखेंगे ' उपन्यास में चित्रित कुछ युवा पात्रों की मानसिकता शक्की है । इस शक के मूल में ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, विश्वास की कमी और अविचार है । इस शक में काल्पनिकता का अधिक्य है । इस शक के कारण ये युवा पात्र नकारात्मक सोचते हैं । इसके कारण उनके बर्ताव में बदलाव आया है । ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता हीनता से ग्रस्त है । इस मानसिकता के मूल में वैयक्तिक अक्षमता और अर्थ का अभाव है । हीनता के कारण इस युवा पात्र का आत्मविश्वास खत्म हुआ है और जीवन उदास बन गया है । इसके कारण उनके बर्ताव और विचारों में बदलाव आया है । ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता अहंग्रस्त है । इस मानसिकता के मूल में ऐश्वर्य, संपन्नता, अभिमान और ' मैं ' की धारणा है । यह अहं घोर है । इसलिए यह युवा पात्र निम्नवर्ग और निम्नमध्यवर्ग की उपेक्षा करता है । ' नौकर की कमीज ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता बेरोजगारी से ग्रस्त है । यह युवा पात्र उच्चशिक्षित

है । इस मानसिकता के मूल में व्यवस्था है । बेरोजगारी के कारण उसका जिंदगी के प्रति उत्साह कम हुआ है । उसका जीवन उदास बन गया है तो भी उसमें आशा की कमी नहीं है । उसका मन संवेदनशून्य बन गया है । प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता प्रतिशोध से ग्रस्त है । बदनामी और अपमान के कारण इस युवा पात्र में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हुई है । इस युवा पात्र के प्रतिशोध में क्रोध का अधिक्य है । यह प्रतिशोध प्रतीकात्मक है । ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' उपन्यास में चित्रित युवा पात्र की मानसिकता अकेलेपन से ग्रस्त है । यह अकेलापन प्रिय व्यक्ति के दूर जाने के कारण उत्पन्न हुआ है । इस मानसिकता के मूल में सहानुभूति, आस्था और आत्मीयता का अभाव है । इस अकेलेपन के कारण यह युवा पात्र उदास और असहाय बन गया है ।

विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में युवा वर्ग के विविध रूप हैं । ठीक उसी प्रकार विवेच्य उपन्यासों में युवा वर्ग की मानसिकता भी विविध प्रकार की है । इस युवा वर्ग की मानसिकता के मूल में अनेक कारण हैं । इनकी वजह से उनकी मानसिकता उस प्रकार की बनी हुई है । विनोदकुमार शुक्ल युवा वर्ग की मानसिकता को ठीक तरह से जानते हैं । इसलिए उनके उपन्यासों में चित्रित युवा मानसिकता लेखकीय दस्तावेज न होकर प्रासंगिक लगता है ।